मूल्यांकन का अर्थ

(Meaning of Evaluation)

मूल्यांकन (Evaluation) एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि कक्षा अध्यापन द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है, अर्थात् अध्यापक यह देखना चाहता है कि उसके विद्यार्थियों ने प्राप्त ज्ञान को किस सीमा तक समझा है, उनकी रुचि तथा व्यवहार में कहाँ तक परिवर्तन हुआ है, उनकी गणित के प्रति अभिरुचि कितनी है, उनकी बुद्धि का स्तर क्या है ? आदि-आदि। यह सब मिलाकर ही मूल्यांकन की प्रक्रिया पूर्ण समझी जाती है।

("Evaluation may be defined as a systematic process of determining the extent to which educational objectives are achieved by pupils.")

— Dandekar

इस प्रकार शिक्षा में मूल्यांकन से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें अध्यापक एक छात्र की शैक्षिक उपलब्धि (Educational Achievement) का पता लगाता है।

(Measuring behavioural changes on the basis of pre-determined objectives is called Evaluation. Evaluation not only tells the teacher how much the child has achieved, but also how good the achievement is.)

प्राय: मूल्यांकन और परीक्षा में अधिक अन्तर नहीं समझा जाता है परन्तु, वास्तव में परीक्षा, मूल्यांकन का केवल एक अंग अथवा पक्ष ही है। मूल्यांकन करने के लिये अध्यापक को समय-समय पर विभिन्न प्रकार के मापन करने पड़ते हैं अथवा, परीक्षा लेनी होती है। अंकन (Scoring) के बाद मापन का कार्य रुक जाता है। ये अंक साँख्यिकी (Statistics) के द्वारा विभिन्न रूपों में जोड़े-तोड़े (manipulation)

Scanned with CamScanner

जाते हैं। किन्तु, मूल्यांकन इससे बहुत आगे तक जाता है, क्योंकि यह मापन द्वारा प्राप्त अंकों के आधार पर मूल्यात्मक निर्णय (Value Judgement) देना चाहता है।

(Evaluation is not limited to examinations or tests. It is a continuous process and an integral part of teaching with a view to know area of difficulty and achieving objectives to the maximum level.

इस प्रकार, मूल्यांकन में मापन और मूल्यात्मक निर्णय समाविष्ट हैं। मूल्यांकन एक गुणात्मक निर्णय करने की प्रक्रिया है, जबकि मापन का रूप आँकिक है। मापन के बिना मूल्यांकन सम्भव ही नहीं है। मापन की सीमायें होती हैं तथा किसी सीमा के बाहर हम तथ्यों या गुणों का मापन नहीं कर सकते। **ई०एल० थॉर्नडाइक** ने कहा है, " प्रत्येक वस्तु जो जरा भी सत्ता रखती है, किसी न किसी परिमाण में सत्ता रखती है और कोई भी वस्तु जिसकी किसी परिमाण में सत्ता है, मापन के योग्य है।"

("Anything that exists at all, exists in some quanity, anything that exists in some quantity is capable of being measured.") **—E. L. Thorndike.**

मूल्यांकन की आधारभूत मान्यतायें

(Basic Assumptions)

प्रत्येक सिद्धान्त की भाँति मूल्यांकन में भी यदि हम कुछ स्वयं सिद्धियों (axioms) को अन्य स्वयं सिद्धियों द्वारा प्रतिस्थापित न करें, तो मूल्यांकन का सम्पूर्ण स्वरूप ही बदल जायेगा।

कुछ महत्त्वपूर्ण मान्यतायें निम्न हैं—

1. शैक्षिक उपलब्धि एक अस्तित्व है और यह एक बहु-विमीय स्वरूप (multi-dimensional entity) है।
2. शैक्षिक उपलब्धि ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो व्यक्ति में समान होती है या नहीं होती है। यह एक अविरल (Continuum) है और विभिन्न कोटि में धारण की जा सकती है।
3. कोई वस्तु जिसका अस्तित्व है, वह मापनीय राशियों में होती है।
4. कोई वस्तु जिसका मूल्यांकन होता है, वह और अच्छी तरह सीखी जाती है।
5. मूल्यांकन = मापन + मूल्यात्मक निर्णय।

इसके अतिरिक्त **समरफील्ड (Roy E. Summerfield)** नें मूल्यांकन में निहित मान्यातायें आठ प्रकार की बताई हैं।

मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान

(Steps in the Evaluation Process)

मूल्यांकन प्रक्रिया के मुख्य तीन सोपान हैं—

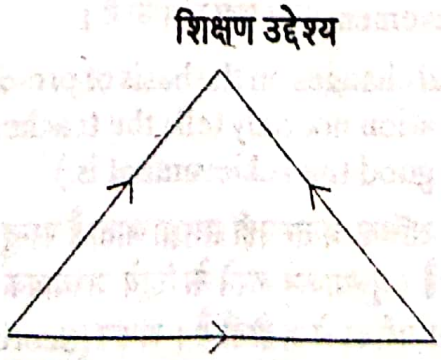

Scanned with CamScanner

1. **शैक्षिण उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषीकरण (Formulation and Definition of Educational Objectives)**— उद्देश्यों को निर्धारित करने से पूर्व बालक, समाज, विषय वस्तु की प्रकृति तथा शैक्षिक स्तर पर पूर्ण ध्यान दिया जाना चाहिये। जिन उद्देश्यों की जाँच होती, उनकी परिभाषा दी जाये। मूल्यांकन में यह आवश्यक है कि जिनका मूल्यांकन होता है, उनको निश्चित करने तथा स्पष्ट करने को मूल्यांकन प्रक्रिया में सदैव प्रधानता दी जाये। जब तक मूल्यांकन का अभिप्राय सावधानीपूर्वक बताया न जाये तब तक कोई भी मूल्यांकन की युक्ति न तो चुनी और न ही विकसित की जाये। मूल्यांकन कर्त्ता के मस्तिष्क में यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि वह किस प्रकार के परिवर्तन किस सीमा तक लाना चाहता है।

2. **अधिगम-अनुभव की योजना बनाना (Planning Learning Experiences)** —अधिगम अनुभव से तात्पर्य एक ऐसी परिस्थिति के निर्माण से है जिसके अन्तर्गत बालक वाँछित प्रक्रिया व्यक्त कर सकता है। अतः अध्यापक को चाहिये कि वह कक्षा के अन्दर ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करे जिससे कक्षा का वातावरण एक उद्दीपक (Stimulus) का कार्य करे। इस बात का ध्यान रखा जाये कि अध्यापन स्थिति तथा सीखने की स्थिति में सामंजस्य हो। कभी-कभी अध्यापक अपनी सुविधा के लिये ऐसी अध्यापन स्थिति का चयन कर लेता है जो विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से उपयुक्त सीखने की स्थिति नहीं होती। शिक्षण अनुभवों को उत्पन्न करते समय अध्यापक को निम्न बातों को भी ध्यान में रखना चाहिए—

1. क्या अधिगम अनुभव (Learning Experiences) शैक्षणिक लक्ष्यों से प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्धित हैं ?
2. क्या ये अनुभव शिक्षार्थी के लिये सार्थक (meaningful) तथा सन्तोषप्रद हैं ?
3. क्या ये अनुभव विद्यार्थी की परिपक्वता (maturity) के अनुकूल हैं ?
4. क्या ये अनुभव पर्याप्त (adquate) हैं ?
5. क्या ये अनुभव बालक के व्यवहार या अविच्छिन्न अंग (intergral part) बन सकते हैं ?

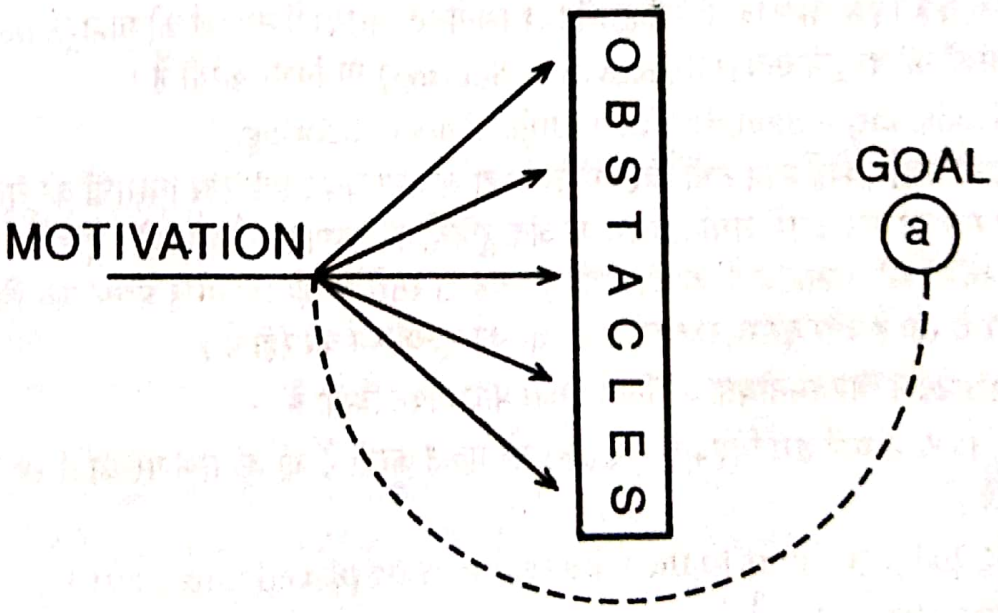

3. **व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन करना (Evaluating on the basis of Behaviour Change)**— शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य बालक के व्यवहार में वाँछित परिवर्तन लाना होता है। बालक व्यवहार उसके अस्तित्त्व के कई पक्षों से सम्बन्धित होता हैं। इसके अन्तर्गत बाह्य तथा

Scanned with CamScanner

आन्तरिक दोनों ही प्रकार के व्यवहार आते हैं। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले सभी विषय बालक के ज्ञानात्मक (Congnitive), भावात्मक (Affective) तथा क्रियात्मक (Conative) पक्षों का विकास करते हैं। उसके व्यवहार के ये तीन मुख्य अंग हैं जो बाह्य तथा आन्तरिक दोनों के रूपों में पाये जाते हैं। मापन के परिणामों का प्रयोग मापन को साध्य न मानकर किसी साध्य के लिये साधन के रूप में लेना चाहिये। इससे अध्यापन तथा अन्य अधिकारियों के लिये यह आवश्य हो जाता है कि वे छात्रों की शिक्षा में इसके परिणाम का उचित सदुपयोग करें। बालकों से सम्बन्धित आँकड़ों का आँख मूँदकर एकत्रीकरण करने तथा उन्हें इस आशा से संचित करने में कि ये भविष्य में कभी उपयोगी सिद्ध होंगे, समय व प्रयास दोनों का दुरुपयोग होता है। केवल परिणामों के सही प्रयोग द्वारा उपलब्धियों में सुधार सम्भव है।

Scanned with CamScanner